

विश्वगुरु भारत
कर्मयोग विशेषांक

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ दिसम्बर २०१८
वर्ष : २८ अंक : ६
(निरंतर अंक : ३१२)
पृष्ठ संख्या : ३६
(आवरण पृष्ठ सहित)

भारतीय संस्कृति के प्रबल रक्षक पूज्य बापूजी की प्रेरणा से अहमदाबाद आश्रम में सम्पन्न हुए दीपावली विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर में हजारों विद्यार्थियों ने संयम-सदाचार के उत्तम संस्कारों के साथ-साथ पाया कर्म, भक्ति व ज्ञान योग का सद्ज्ञान ।

प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर बढ़ रहे शिविरार्थी ६



ध्यान



प्रार्थना



भगवन्नाम-संकीर्तन

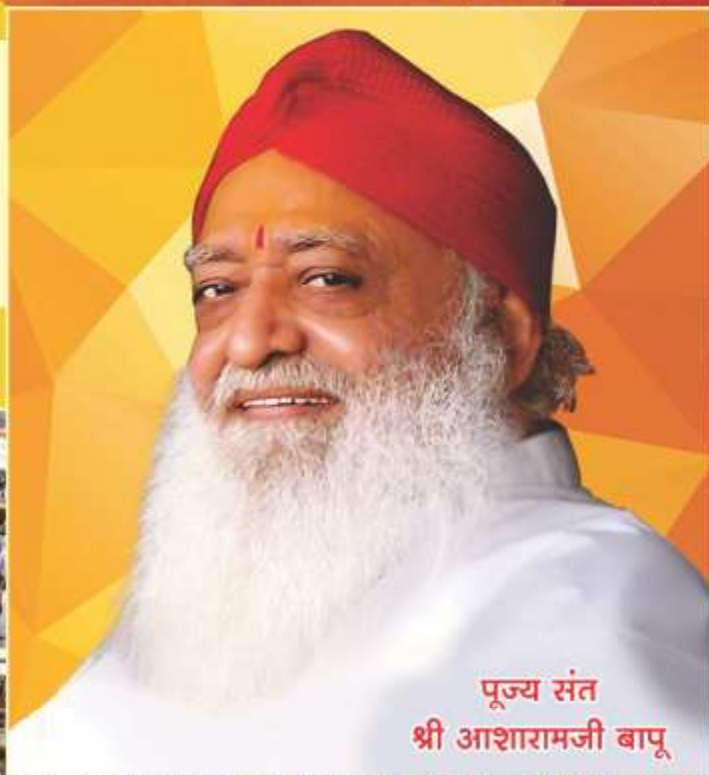


सूर्यदेव को अर्घ्यदान



योगासन

अपने पूज्य गुरुदेव का दर्शन-सान्निध्य पाने हेतु प्रार्थना करते शिविरार्थी



पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू



शिविर के दौरान
बिकती गुरु-पादुका
शोभायात्रा



ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन व लोक कल्याण सेतु के सदस्यता व सत्साहित्य अभियान द्वारा ज्ञान-प्रचार सेवा में सहभागी बच्चे हुए पुरस्कृत



२५ दिसम्बर
तुलसी पूजन दिवस
भगवान श्रीरामजी व अन्य
अवतारों ने भी की थी
तुलसी-पूजा ४

परम उन्नति के शिखर पर पहुँचानेवाली महान सीढ़ी : विश्वगुरु भारत प्रकल्प

विश्वगुरु भारत कार्यक्रम : २५ दिसम्बर से १ जनवरी पर विशेष

भारत ही विश्वगुरु पद का अधिकारी क्यों ?

किसी भी व्यक्ति, जाति, राज्य, देश को जितने ऊँचे स्तर पर पहुँचना हो, उसके लिए उसे अपना दृष्टिकोण, कार्य, सिद्धांत और हृदय भी उतना ही व्यापक रखना आवश्यक होता है। उसको व्यापक मांगल्य का भाव रखने के साथ-साथ संकीर्णता को दूर रखना जरूरी होता है। ऐसे उच्चातिउच्च सिद्धांत, भाव एवं कार्य भारतीय संस्कृति के मुख्य अंग हैं और ऐसे सिद्धांतों को हृदय के अनुभव से प्रकट करनेवाले, जीवन में उतारनेवाले, लोगों के जीवन में भी उन सिद्धांतों को सुदृढ़ करने की क्षमता रखनेवाले महापुरुष भी भारत में ही अधिक हुए हैं, हो रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। भगवान के अवतार भी भारत में ही होते रहे हैं और आगे भी होंगे। इस कारण भारत विश्वगुरु पहले भी था और फिर से उस पद पर आसीन होने का अधिकारी भी है।

प्रकल्प का उद्देश्य व नींव

अन्य देशों पर अपना आधिपत्य जमाना यह औपनिवेशिक सभ्यता का उद्देश्य होता है जबकि सबको आत्मदृष्टि से देखना, आत्मभाव से आदान-प्रदान व कार्य-व्यवहार करना, सबकी आध्यात्मिक उन्नति, सर्वांगीण उन्नति को महत्त्व देना तथा हर व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन के हर पल को आनंदमय, रसमय व प्रेममय बनाये, सबका वर्तमान में एवं भविष्य में भी मंगल हो, सम्पूर्ण विश्व एक सूत्र में, आत्मिक सूत्र में बँधे और सबका मंगल, सबका भला हो - यह भारतीय संस्कृति का उद्देश्य है और इसको जन-जन के जीवन में प्रत्यक्ष करना, साकार करना यह 'विश्वगुरु भारत प्रकल्प' का उद्देश्य है।

इस प्रकल्प की नींव क्या है ? इसकी नींव है आध्यात्मिकता, ब्रह्मविद्या, योगविद्या, वेदांत-ज्ञान, वेदांत के अनुभवनिष्ठ महापुरुषों की अमृतवाणी, उनके अमिट एवं अकाद्य सिद्धांत, उनका जीवन, दर्शन और मंगलमय पवित्र प्रेम-प्रवाह, जो समस्त संसार को एक सूत्र में बाँधने में पूर्ण सक्षम है, हर दिल पर राज करने में सक्षम है। इसके अलावा दूसरी किसी भी नींव पर विश्व को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करना बालू की नींव पर विशाल बहुमंजिला इमारत बनाने के समान निरर्थक एवं बालिश प्रयास है।

इस प्रकल्प की आवश्यकता क्यों ?

भारत विश्वगुरु होते हुए भी कुछ सदियों से अपनी आत्ममहिमा को ही भूल गया।

(शेष पृष्ठ २८ पर)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओडिया, तेलुगु, कन्नड, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : ६ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३१२
प्रकाशन दिनांक : १ दिसम्बर २०१८
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
मार्गशीर्ष-पौष वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेज जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवचन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ओम मैनुफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,
पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफैक्चरर्स' (Hari Om Manufacturerees) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' छूटाछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org,
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस 'विश्वगुरु भारत कर्मयोग विशेषांक' में...

- ❖ पर्व मांगल्य * ...विश्वगुरु भारत प्रकल्प - मनोज मेहेर २
- * आओ करें पूजन गुणों की खान तुलसी का ४
- * कुम्भ का वास्तविक लाभ कैसे पायें ? ११
- * शुभ संकल्प करने एवं सुसंग व सुज्ञान पाने का पर्व : उत्तरायण १२
- ❖ गुरु संदेश * दीपावली शिविर पर पूज्य बापूजी का पावन संदेश ५
- ❖ दीपावली विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर - एक विहंग अवलोकन ६
- ❖ आप कहते हैं... ७-९, २७, ३०
- * नौनिहालों ने कहा... * युवक-युवतियों के मनोभाव
- * बच्चों के अभिभावकों के हृदयोद्गार
- * ऋषि प्रसाद से मेरी समस्याओं का हल... - बी. एम. प्रजापति
- ❖ गीता-अमृत * ...तो कर्मयोग में सफल हो के आत्मसाक्षात्कार ! १०
- ❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १४
- * गुरु-कृपा व सान्निध्य के अविस्मरणीय प्रसंग
- ❖ ऋषि ज्ञान प्रसाद * आप भी लें इस प्रारूप का विशेष लाभ १७
- ❖ योग-वेदांत-सेवा * आत्मसाक्षात्कार करना ही पड़ेगा ! १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार * कील न टुकवायी... देश हारा १८
- * बुद्धि और शरीर दोनों बढ़िया कैसे ? * नीर-क्षीर विवेक
- ❖ तेजस्वी युवा * 'युवा सेवा संघ' का लक्ष्य २०
- * 'युवा सेवा संघ' का युवाओं के लिए आवाहन
- ❖ महिला उत्थान * गुरु तो अपना पूरा खजाना लुटाना चाहते हैं... २१
- ❖ तत्त्व दर्शन * ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त साधन २२
- ❖ कैसे होंगे हृदय के नारायण प्रकट ? २४
- ❖ कैसी बढ़िया समझ ! २५
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
- ❖ संस्था समाचार * 'भंडारा तो हुआ लेकिन हमारे बापू को नहीं लाये !' २७
- * बड़े स्तर पर मना गोपाष्टमी पर्व * मनाया 'राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस'
- ❖ सम्राट अशोक की सेवापरायणता ३०
- ❖ सच्चे कर्मवीरो ! अमृतकलश उठाओ... - साँई लीलाशाहजी ३१
- ❖ शरीर स्वास्थ्य * कैसे पायें मधुमेह (diabetes) से छुटकारा ? ३२
- * पौष्टिक एवं बलवर्धक सूखे मेवे
- ❖ सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ ३४
- * ऐश्वर्य, सम्पत्ति, कीर्ति व आरोग्यप्रद सूर्य मंत्र
- * स्वास्थ्यबल, मनोबल व रोगप्रतिकारक बल बढ़ाने की कुंजी

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

			
रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि १०-०० बजे	www.ashram.org/live	रोज सुबह ७ व रात्रि ९ बजे

- * 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७९), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), बिहार में मौर्या सिटी (चैनल नं. ३११), राँची में जीटीपीएल व डेन केबल पर तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- * 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

Download Rishi Prasad Official, Rishi Darshan & Mangalmay Official Apps

आओ करें पूजन गुणों की खान तुलसी का

तुलसी का धार्मिक, आयुर्वेदिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक महत्त्व है। साथ ही यह स्वास्थ्य व पर्यावरण-सुरक्षा की दृष्टि से भी अहम है। जिस घर में तुलसी का वास होता है वहाँ आध्यात्मिक उन्नति के साथ सुख-शांति एवं आर्थिक समृद्धि स्वतः आती है। वातावरण में स्वच्छता एवं शुद्धता, प्रदूषण-शमन, घर-परिवार में आरोग्य की जड़ें मजबूत करना आदि तुलसी के अनेक लाभ हैं।

तुलसी के नियमित सेवन से सौभाग्यशालिता के साथ ही सोच में पवित्रता, मन में एकाग्रता आती है और क्रोध पर नियंत्रण होता है। आलस्य दूर होकर शरीर में दिनभर स्फूर्ति बनी रहती है।

तुलसीदल एक उत्कृष्ट रसायन है। तुलसी सौंदर्यवर्धक एवं रक्तशोधक है। गुणों की दृष्टि से यह संजीवनी बूटी है, औषधियों की खान है। अथर्ववेद में काली औषधि (श्यामा तुलसी) को महौषधि कहा गया है। भगवान विष्णु को प्रिय होने के कारण इसको 'वैष्णवी' भी कहते हैं।

विज्ञान के अनुसार घर में तुलसी-पौधे लगाने से स्वस्थ वायुमंडल का निर्माण होता है। तुलसी से उड़ते रहनेवाला तेल आपको अदृश्य रूप से कांति, ओज और शक्ति से भर देता है। अतः सुबह-शाम तुलसी के नीचे धूप-दीप जलाने से नेत्रज्योति बढ़ती है, श्वास का कष्ट मिटता है। तुलसी के बगीचे में बैठकर पढ़ने, लेटने, खेलने व व्यायाम करनेवाले दीर्घायु व उत्साही होते हैं। तुलसी उनकी कवच की तरह रक्षा करती है।

तुलसी के पास बैठकर प्राणायाम करने से शरीर में बल तथा बुद्धि और ओज की वृद्धि होती है। प्रातः खाली पेट तुलसी का १-२ चम्मच रस (या आश्रम के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध तुलसी अर्क) पीने अथवा ५-७ पत्ते चबा-चबाकर खाने और पानी पीने से बल, तेज और स्मरणशक्ति में वृद्धि होती है।

फ्रेंच डॉक्टर विक्टर रेसीन कहते हैं : "तुलसी एक अद्भुत औषधि (Wonder Drug) है, जो ब्लडप्रेसर व पाचनतंत्र के नियमन, रक्तकणों की वृद्धि व मानसिक रोगों में अत्यंत लाभकारी है।"

जिस घर में तुलसी का पौधा होता है वह घर तीर्थ समान पवित्र होता है। उस घर में (रोगरूपी) यमदूत नहीं आते। (स्कंद पुराण)

भगवान महादेवजी कार्तिकेयजी से कहते हैं : "सभी प्रकार के पत्तों और पुष्पों की अपेक्षा तुलसी ही श्रेष्ठ मानी गयी है। कलियुग में तुलसी का पूजन, कीर्तन, ध्यान, रोपण और

धारण करने से वह पाप को जलाती और स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करती है। जो तुलसी के पूजन आदि का दूसरों को उपदेश देता और स्वयं भी आचरण करता है, वह भगवान के परम धाम को प्राप्त होता है।"

(पद्म पुराण, सृष्टि खंड : ५८.१३१-१३२)

तुलसी से होनेवाले लाभों से सारा विश्व लाभान्वित हो इस उद्देश्य से पूज्य बापूजी ने २५ दिसम्बर को 'तुलसी पूजन दिवस' के रूप में मनाना शुरू करवाया। इस पहल का स्वागत करते हुए बड़े स्तर पर यह दिवस मनाया जाने लगा है।

पाश्चात्य कल्चर का प्रचार-प्रसार

करनेवाले पंथ २५ दिसम्बर के निमित्त कई कार्यक्रम करते हैं एवं हमारे बाल, युवा एवं प्रौढ़ -

(शेष अगले पृष्ठ पर)



दीपावली विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर में आये नौनिहालों ने कहा...



अमन कुमार, जम्मू : दीपावली के दिनों में आध्यात्मिक उन्नति होनी चाहिए। घर में तो हम पटाखे फोड़ते हैं, मिठाइयाँ खाते हैं, इससे हमारी उन्नति नहीं हो सकती। अगर हमें आध्यात्मिक उन्नति करनी है, आगे बढ़ना है तो हमें अनुष्ठान शिविर में आना ही चाहिए।



भार्गवी राठौर, दमण : मैं अहमदाबाद आश्रम में पहली बार आयी हूँ। यहाँ बड़ी शांति मिली। ध्यान, सत्संग व कीर्तन में बहुत आनंद आया। परीक्षा में जैसे ही मैं बापूजी का ध्यान करती हूँ, वैसे ही मुझे जो याद नहीं आ रहा हो वह भी याद आ जाता है। मैं चाहती हूँ कि बापूजी जल्दी आयें और हमें मंत्रदीक्षा मिले।



दीक्षा मंडल, नेपाल : जो घर में कभी नहीं मिल सकता है, वह ज्ञान, शांति, आनंद हमें गुरुद्वार पर मिलता है। मैं बापूजी की कृपा से अपने जिले की बैडमिंटन चैम्पियन हूँ। खेल से पहले मैं हमेशा पूज्य बापूजी का स्मरण करती हूँ, फिर खेलती हूँ इसीलिए चैम्पियन हूँ।



हिमांशु रॉय, रायपुर (छ.ग.) : बापूजी के ऊपर झूठे आरोप लगाये गये हैं और समाज इसे समझ नहीं पा रहा है, चुप बैठा है। कॉन्वेंट स्कूलों द्वारा बच्चों को भारतीय संस्कृति के संस्कारों से दूर किया जा रहा है इसलिए बापूजी का बाहर आना बहुत जरूरी है।

शुभम, ओडिशा : हम ओडिशा के आश्रम संचालित 'बाल मंडल' के विद्यार्थी हैं। हम वहाँ



गाँव-गाँव जाकर मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम करवाते हैं, समाज तक सत्साहित्य पहुँचाने की सेवा करते हैं, गोहत्याबंदी और व्यसनमुक्ति अभियान की रैलियाँ निकालते हैं।



शीरूपीरू गगनेजा, कक्षा ७, सहारनपुर : ऋषि प्रसाद जैसा सदग्रंथ मैंने कहीं नहीं पढ़ा। और ऋषि दर्शन देखने से ऐसा लगता है जैसे साक्षात् गुरुदेव ही हमारे घर आये हैं।

मैंने अभी तक ऋषि प्रसाद के ११५ सदस्य बना लिये हैं। हम विद्यार्थियों को ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन के द्वारा खुद का कल्याण तो करना ही है, साथ ही इनको जन-जन तक पहुँचाकर दूसरों का भी कल्याण करना है।



यशवंत पटेल, कक्षा ६, जबलपुर : मुझे इस शिविर में 'ऋषि प्रसाद' और 'लोक कल्याण सेतु' की सेवा करने का सुअवसर मिला। मैंने कुल ४५ सदस्य बनाये। मुझे सेवा करने में बहुत आनंद आया। मैंने ऋषि प्रसाद की एक रसीद बुक भी ली है, इसे मैं भरकर ही रहूँगा।



परी सामंत, कक्षा ५, अहमदाबाद : शिविर में मैंने ऋषि प्रसाद के १० सदस्य बनाये।



साक्षी मौर्य, कक्षा ८, मुंबई : हमारे घर हर महीने 'ऋषि प्रसाद' आती है। इसके पृष्ठ १८-१९ पर 'विद्यार्थी संस्कार' छपता है, जो हम बच्चों के लिए बड़ा ही ज्ञानप्रद है। दीपावली अनुष्ठान शिविर में मैंने ऋषि प्रसाद के सदस्य बनाने की सेवा में भी भाग लिया और बहुत सारे सदस्य बनाये।

युवक-युवतियों के मनोभाव



सुजाता, स्टॉक मार्केट में रिसर्च जर्नलिस्ट, दिल्ली : मैं पहली बार यहाँ आयी हूँ। सच्ची उन्नति की अनेकानेक युक्तियाँ जो पूज्य बापूजी बताते हैं, वे बाहर कहीं नहीं मिलती हैं।

मैं समाज से यही कहूँगी कि आप लोग एक बार बापूजी का कोई भी सत्संग सुन के देखिये, ऋषि प्रसाद या कोई भी पुस्तक एक बार जरूर पढ़ें, आपको खुद समझ में आयेगा कि बापूजी क्या हैं !



अभिषेक मुंडे, सोलापुर (महा.) : मैंने बापूजी से अभी मंत्रदीक्षा नहीं ली है पर ५ साल से यहाँ शिविर में आ रहा हूँ। आज का युवा अश्लीलता की तरफ जा रहा है, नारकीय जीवन जी रहा है लेकिन जब वे पूज्य बापूजी के आश्रम में आ जाते हैं तो उनकी सारी बुरी आदतें छूट जाती हैं, दिव्य जीवन की शुरुआत होती है।

कई मीडियावालों ने जो चैनल पर दिखाया, जब इधर आकर देखा तो वैसा कुछ भी नहीं है, केवल भ्रामक दुष्प्रचार किया गया।



भारती पंजवानी, प्रोफेसर, कटनी (म.प्र.) : मेरे जीवन में जो भी उन्नति हुई है, वह सब पूज्य बापूजी की देन है। मैं कॉलेज में पढ़ाती हूँ तो मैंने वहाँ की दुनिया देखी है कि विद्यार्थी कैसे व्यसनों में लिप्त हैं। ब्रह्मचर्य का तो उनके जीवन में दूर-दूर तक कोई नामोनिशान नहीं है !... जबकि यहाँ छोटे-छोटे बच्चे संयम-सदाचार का पालन तथा योगासन, जप व सेवाएँ करते हुए आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं। मेरा कोटि-कोटि नमन है पूज्य बापूजी को, जिन्होंने भारतीय संस्कृति की महिमा को

भूलते जा रहे समाज को इसके प्रति सजग किया तथा देश की भावी पीढ़ी में हमारी संस्कृति के संस्कारों का सिंचन किया है।



पारस दुबे, छतरपुर (म.प्र.) : मैं इस शिविर में पहली बार आया हूँ। भारतीय संस्कृति के रक्षण व उसे बढ़ाने के लिए ऐसा कोई कार्य नहीं है जो पूज्य बापूजी से अछूता रह गया हो। मैं समाज से आवाहन करता हूँ कि बापूजी के बारे में सच्चाई जानें। बापूजी के दैवी सेवाकार्यों से हर व्यक्ति को जुड़ जाना चाहिए क्योंकि अगर अभी नहीं जुड़े तो बहुत देर हो जायेगी।



लक्ष्मणपुरी गोस्वामी, रेलवे अधिकारी, बालाघाट (म.प्र.) : मैं यहाँ अपने आसपास के गाँवों के बच्चों को साथ लाया हूँ। वैसे तो समर कैम्प और विंटर कैम्प होते हैं, जहाँ पर खेलकूद, डांस आदि में पाश्चात्य कल्चर का प्रभाव दिखाई देता है। परंतु मैं यहाँ पहली बार आया तो देखा कि जो शिक्षाएँ भगवान वसिष्ठजी के आश्रम में, सांदिपनि मुनि के आश्रम में मिलती थीं, वे ही परम पूज्य बापूजी के आश्रम में विद्यार्थियों को मिल रही हैं। ये पूरे भारत के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक हैं।

मैं पहले एक सनकी मिजाज का व्यक्ति था। पढ़ाई तो खूब करता था पर मुझे नौकरी नहीं मिलती थी। कभी तो लगता कि आत्महत्या कर लूँ। फिर बापूजी से मंत्रदीक्षा ली और जप किया, उनके द्वारा बताये गये नियमों का पालन किया और कुछ ही महीनों में मेरी रेलवे में नौकरी लग गयी। मैंने सोचा कि 'जो लाभ मुझे मिल रहा है, क्यों न दूसरों को भी मिले !' इसलिए यहाँ विद्यार्थियों को भी लाया हूँ।

शुभ संकल्प करने एवं सुरसंग व सुज्ञान पाने का पर्व : उत्तरायण

भगवान के होकर आगे बढ़ो !

उत्तरायण का वाच्यार्थ यही है कि सूर्य का उत्तर की तरफ प्रस्थान। ऐसे ही मानव ! तू उन्नति की तरफ चल, सम्यक् क्रांति कर। सोने की लंका पा लेना अथवा बाहर की पदवियाँ ले लेना, मकान-पर-मकान बना के और कम्पनियों-पर-कम्पनियाँ खोलकर उलझना - यह राक्षसी उन्नति है। आधिभौतिक उन्नति में अगर आध्यात्मिक सम्पुट नहीं है तो वह आसुरी उन्नति है। रावण के पास सोने की लंका थी लेकिन अंदर में सुख-शांति नहीं थी। क्या काम की वह उन्नति ! हिटलर, सिकंदर की उन्नति क्या काम की ? उनको ही ले डूबी। राजा जनक, राजा अश्वपति, राजा रामजी की उन्नति वास्तविक उन्नति है। रामजी के राज्याभिषेक की तैयारियाँ हो रही थीं तो वे हर्ष में फूले नहीं और एकाएक कैकेयी के कलह से वनवास का माहौल बना तो दुःखी, शोकातुर नहीं हुए। घोड़े हुंकार रहे हैं, हाथी चिंघाड़ रहे हैं, युद्ध के मैदान में एक-दूसरे के रक्त के प्यासे राग-द्वेष में छटपटा रहे हैं... उस माहौल में अंतरात्मा में तृप्त बंसीधर की बंसी बज रही है... श्रीकृष्ण की गीता के ज्ञान से अर्जुन का 'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा' हो गया। वास्तविक उन्नतिदाता के, गीता के आत्मज्ञान के प्रसाद से, बंसीधर की अनुभव-पोथी 'गीता' से अर्जुन तो शोक, मोह से तर गया और वह गीता-ज्ञान आज भी असंख्य लोगों की वास्तविक उन्नति का पथ-



प्रदर्शन कर रहा है। हे मानव ! ऐसे तेरे महान आत्मवैभव को पा ले, पहचान ले !

'अपने बल से मैं यह कर लूँगा, वह कर लूँगा...' अगर अपने बल से कुछ करने में सफल हो गये तो अहंकार पछाड़ देगा और नहीं कर पाये तो विषाद दबा देगा लेकिन 'देवो भूत्वा देवं

यजेत्।' भगवान के होकर भगवान से मिल के आप आगे बढ़िये, बड़े सुरक्षित, उन्नत हो जाओगे। बड़ा आनंदित, आह्लादित जीवन बिताकर जीवनदाता को भी पा लो। चिन्मय सुख प्रकट होगा। संसारी सुख शक्ति का हास करता है। विकारी सुख पहले

प्रेम जैसा लगता है, बाद में खिन्नता, बीमारी और बुढ़ापा ले आता है लेकिन भगवत्सुख वास्तव में भगवन्मय दृष्टि देता है, भगवद्ज्ञान, भगवत्शांति, भगवत्सामर्थ्य से आपको सम्पन्न कर देता है।

निसर्ग से दूर न होओ और अंतरात्मा की यात्रा करो

सूर्य को अर्घ्य देने से मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। सूर्य की कोमल धूप में सूर्यस्नान करना और नाभि में सूर्य का ध्यान करना, इससे मंदग्नि दूर होती है, स्वास्थ्य-लाभ मिलता है। सूर्यनमस्कार करने से बल और ओज-तेज की वृद्धि होती है। कहाँ तुमसे सूर्य दूर है, कहाँ परे है, कहाँ पराया है ! कपड़ों-पर-कपड़े पहनकर निसर्ग से दूर होना कुदरत के साथ द्रोह करना है। ऐसा करनेवाला मानव तुच्छ, पेटपालू प्राणी की नाई भटकता



विद्यार्थी संस्कार



कील न ठुकवायी... देश हारा

- पूज्य बापूजी

संयम और तत्परता छोटे-से-छोटे व्यक्ति को महान बना देती है और संयम का त्याग, विलासिता और लापरवाही पतन करा देती है। जहाँ विलास होगा वहाँ लापरवाही आ जायेगी। पापकर्म, बुरी आदतें लापरवाही ले आती हैं, आपकी योग्यताओं को नष्ट कर देती हैं और तत्परता को हड़प लेती हैं।

किसी देश पर शत्रुओं ने आक्रमण की तैयारी की। गुप्तचरों द्वारा राजा को समाचार पहुँचाया गया कि 'शत्रु-देश द्वारा सीमा पर ऐसी-ऐसी तैयारियाँ हो रही हैं।' राजा ने मुख्य सेनापति के लिए संदेशवाहक द्वारा पत्र भेजा। संदेशवाहक की घोड़ी के पैर की नाल में से एक-दो कील निकल गयी थी। उसने सोचा, 'एक कील ही तो निकल गयी है, कभी ठुकवा लेंगे।' उसने थोड़ी लापरवाही की। जब वह संदेश लेकर जा रहा था तो उसकी घोड़ी के पैर की नाल निकल पड़ी। घोड़ी गिर गयी। सैनिक मर गया। संदेशा न पहुँच पाने के कारण दुश्मनों ने आक्रमण कर दिया और देश हार गया।

कील न ठुकवायी... घोड़ी गिरी...

सैनिक मरा... देश हारा।

एक छोटी-सी कील न लगवाने की लापरवाही के कारण पूरा देश हार गया। अगर उसने उसी समय तत्पर होकर कील लगवायी होती तो ऐसा न होता। अतः जो काम जब करना चाहिए, कर ही लेना चाहिए। समय बरबाद नहीं करना चाहिए।

एक-एक कार्य पर सतर्कतापूर्वक निगरानी रखो। 'अमुक कार्य का परिणाम क्या आयेगा? इसमें दूसरों की हानि तो नहीं होगी? कहीं समय व्यर्थ तो

नहीं चला जायेगा?' - इस प्रकार की सतर्कता से मनुष्य का जीवन अत्यंत उन्नत हो जाता है जबकि जरा-सी लापरवाही करते-करते मनुष्य अत्यंत नीचे आ जाता है। अतः प्रत्येक पल सावधान रहो, सतर्क रहो, लापरवाही का त्याग कर दो, आलस्य-प्रमाद को तिलांजलि दे दो तो जीवन के हर क्षेत्र में सफल होना आसान हो जायेगा। □

बुद्धि और शरीर दोनों बढ़िया कैसे ?

- पूज्य बापूजी

मिस्टर सोलन से पूछा गया कि 'आप इतने बुद्धिमान हैं और इतना ऊँचा, भारी उपदेश देते हैं और आपका शारीरिक गठन भी बढ़िया है, क्या कारण है? सामान्य तौर पर जहाँ अकल होती है वहाँ शरीर दुबला होता है और जहाँ शरीर भँसे जैसा होता है वहाँ दिमाग नहीं होता है। लेकिन आपका शारीरिक गठन भी बढ़िया है और बुद्धि का भी विकास इतना है, इसका कारण क्या है?'

सोलन ने कहा कि 'कुछ-न-कुछ परिश्रम मैं खोज लेता हूँ इसलिए शरीर का ढाँचा मजबूत है और मैं संसार में विद्यार्थी होकर रहता हूँ। कुछ-न-कुछ नया विचारता रहता हूँ, खोजता रहता हूँ इसलिए बुद्धि का भी विकास है।'

घर-घर चाहो सुसंस्कार
तो गली-गली हो बाल संस्कार।
घर-घर चाहो ज्ञान-आह्लाद
तो हाथ-हाथ हो ऋषि प्रसाद ॥

१. आश्रम के मासिक प्रकाशन 'ऋषि प्रसाद' के अलावा इसका मासिक विडियो संस्करण 'ऋषि दर्शन' डी.वी.डी. तथा मासिक पत्र 'लोक कल्याण सेतु' भी विशेष ज्ञान-आह्लादवर्धक हैं।

ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त साधन

शुद्ध अंतःकरणवाले मुमुक्षु के लिए ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के सान्निध्य में ब्रह्मविचार ही मोक्षप्राप्ति का साधन बताया गया है। अंतःकरण को शुद्ध करने के लिए सेवा-सत्कर्म महत्त्वपूर्ण साधन है। गुरुसेवा से अंतःकरण को शुद्ध किये बिना कितना भी ब्रह्मविचार कर ले, वह मोक्षप्राप्ति तो दूर, सामान्य दुःख-निवृत्ति के भी काम नहीं आता। अतः सेवा और ब्रह्मविचार अर्थात् सत्कर्म और सद्ज्ञान इन दोनों पंखों से ही परमानंदस्वरूप परम पद के महाकाश में उड़ान भरी जा सकती है ऐसा शास्त्रों का निर्णय है। इसलिए वेदांत में ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त साधनों की चार कक्षाएँ स्वीकार की गयी हैं :

(१) हमारे कर्मों का प्रभाव हमारे अंतःकरण पर पड़ता है। अतः कुछ साधन कर्म की शुद्धि के लिए हैं। उनको कर्म-शोधक साधन कहते हैं।

(२) कुछ साधन पूर्वकृत कर्मों से उत्पन्न अंतःकरण में पड़े हुए राग-द्वेष की निवृत्ति के लिए होते हैं। इसलिए इन साधनों को करण-शोधक साधन कहते हैं।

(३) वासना की न्यूनता अथवा शुद्धि होने पर भी बुद्धि में जो अपने, जगत के और ब्रह्म के बारे में अज्ञान, संशय और विपरीत ज्ञान भरा है, उसके शोधन हेतु जो साधन हैं वे पदार्थ-शोधक साधन कहलाते हैं।

(४) अंत में पद-पदार्थ (महावाक्य के पद एवं उन पदों के अर्थ) का यथार्थ बोध होने पर भी जब तक अपनी पूर्णता के बोधक 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्यजन्य अखंडार्थ-धी (आत्मा और ब्रह्म की एकता का बोध करानेवाली वृत्ति) का उदय नहीं होता, तब तक ब्रह्मात्मैक्य-बोध नहीं होता। अतः

इस ब्रह्मात्मैक्य-बोधिनी वृत्ति को वेदांत में साक्षात् साधन कहा गया है।

इसे आप बंदूक के दृष्टांत से समझ सकते हैं। नियम यह है कि ठीक निशाना लगाने के लिए चार बातें आवश्यक हैं : (१) बंदूक की नली साफ हो। (२) बंदूक में गोली भरी हो। (३) आँख, नली और लक्ष्य - तीनों एक सीध में कर लिये गये हों तथा उँगली बंदूक के घोड़े पर हो। (४) अंत में घोड़ा दबा दिया जाय। यहाँ बंदूक की नली साफ करना कर्म-शोधक साधन है, गोली भरना करण-शोधक साधन है, लक्ष्य की एकता करना पदार्थ-शोधक साधन है तथा घोड़ा दबा देना साक्षात् साधन है।

इन चार साधनों के दूसरे नाम अधिक प्रचलित हैं। कर्म-शोधक साधन 'परम्परा साधन' कहलाते हैं, करण-शोधक साधन 'बहिरंग साधन' कहलाते हैं और पदार्थ-शोधक साधन 'अंतरंग साधन' कहलाते हैं। साक्षात् साधन तो साक्षात् है ही; वैसे कोई-कोई उसे 'परम अंतरंग साधन' भी कहते हैं। अब इनके बारे में थोड़ा-थोड़ा विचार करें।

(१) परम्परा साधन (कर्म-शोधक साधन)

: वस्तु और क्रिया के अनुचित संबंध से होनेवाले जो असाधन जीवन में आते हैं, जैसे - चोरी, व्यभिचार, अनाचार आदि, उनकी निवृत्ति के लिए जो साधन परम्परा से चले आ रहे हैं, जैसे - अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि, वे परम्परा साधन कहलाते हैं। धर्म, उपासना और योग परम्परा साधन हैं।

शारीरिक और ऐन्द्रियक संयम तथा यज्ञ-यागादिक कर्म धर्म कहलाते हैं। कर्तव्य-कर्म का नाम धर्म है। परंतु धर्म का आधार एकमात्र शास्त्र ही है। शास्त्रविहित कर्म का नाम धर्म है और शास्त्र

तत्त्व
दर्शन

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी

गीता जयंती एवं विश्वगुरु भारत कार्यक्रम के विभिन्न पर्वों की महिमा



वर्णित हैं।

विश्व के साहित्य में गीता के समान प्रेरक एवं उत्कृष्ट ग्रंथ अन्य नहीं है। हिन्दू धर्म के सारभूत प्रधान नियम अत्यंत स्पष्टरूप से गीता में

- स्वामी शिवानंदजी



भारतीय संस्कृति की दृष्टि से गौ का महत्त्व तो गायत्री और गंगा से भी बढ़कर है। गायत्री की साधना में कठिन तपस्या अपेक्षित है। गंगा-सेवन के लिए भी कुछ त्याग करना ही पड़ता है परंतु गौ का लाभ तो घर बैठे ही मिल जाता है।

- संत देवराहा बाबा

गौ-रक्षा से सब तरह का लाभ है - इस बात को धर्मप्राण भारतवर्ष ही समझ सकता है, दूसरे देश नहीं समझ सकते क्योंकि उनके पास गहरी धार्मिक और पारमार्थिक बातों को समझने के लिए वैसी बुद्धि नहीं है और वैसे शास्त्र भी नहीं हैं। जो लोग विदेशी संस्कृति, सभ्यता से प्रभावित हैं तथा केवल भौतिक चकाचौंध में फँसे हुए हैं, वे भी गाय का महत्त्व नहीं समझ सकते।

- स्वामी रामसुखदासजी



गौ-रक्षण, गौ-पालन और गौ-संवर्धन भारतवर्ष के लिए नया नहीं है। यह भारतवर्ष का सनातन धर्म है। **- श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजी**



जो राष्ट्र गौ-रक्षा में प्रमाद करता है, वह इस संसार में यश और श्री से हीन हो जाता है।

- प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी

इसी अंक के 'नीर-क्षीर विवेक' के उत्तर
(१) ख (२) क (३) ख (४) ख



भगवद्गीता बड़ी ही महान है। उसके ज्ञान से जीव के जन्म-मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है। वह सदा के लिए वैकुण्ठासी (अकुंठित मति से युक्त, सर्वव्यापक परमात्मस्वरूप से एकाकार) होकर संसाररूपी समुद्र से तर जाता है।

- संत ज्ञानेश्वरजी



जो कोई तुलसी के पौधे को जल चढ़ाता है उसके महादोष नष्ट होते हैं।

- संत नामदेवजी



गीता जीवनोपयोगी शास्त्र है और इसलिए उसमें स्वधर्म पर इतना जोर दिया गया है।

- संत विनोबाजी भावे

गीता पढ़ रे ! नित्य ही, अन्य धर्म^१ दे त्याग ।
अपने आत्मकृष्ण में, कर केवल अनुराग ॥
कर केवल अनुराग एक अद्वय शिव माहीं ।
सबमें उसे निहार, स्वप्न भी दूजा नाहीं^२ ॥
'भोला' चित्त मलीन, शांति से रहता रीता ।
पढ़ गीता हो शांत, यही कहती है गीता ॥

- संत भोले बाबा



नित्यकर्म हों या प्रासंगिक कर्म - इन्हें अनासक्त भाव से करना चाहिए। अनासक्त होकर कर्म करने से ईश्वर का सच्चा ज्ञान होता है, जिससे मन की दुविधा से मुक्ति प्राप्त होती है।

- संत अखा भगतजी

१. अपने मनमाने कर्तव्य २. स्वप्न में भी आत्मा के सिवा अन्य किसीका अस्तित्व नहीं देखो-जानो



**नये रूप में
'हमारा प्यारा
बाल संस्कार'**

"BSK Sant Shri Asharamji Ashram" Android App
बाल संस्कार केन्द्र शिक्षक अपने केन्द्र का रजिस्ट्रेशन कराने के लिए गूगल प्ले स्टोर से इस एप को डाउनलोड करें और पायें बाल संस्कार तथा गीता जयंती, तुलसी पूजन, मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम आदि सेवाओं की जानकारी। इस एप के माध्यम से आयोजित स्पर्धाओं में भाग लेकर जीतें आकर्षक इनाम!

सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७४९/५०. वॉट्सएप नं. : ७६००३२५६६६

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से शुरू होने जा रहा है...

कौन बनेगा सर्वपति

Online Quiz



**आकर्षक
पाठ्य**



**गिफ्ट
बॉक्स**

आश्रम संचालक, समितियाँ व सेवाधारी प्रचार-प्रसार शुरू करने व अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद।

दूरभाष : (०७९) ३९८७७७४९/५०/८८

वॉट्सएप नम्बर : ७६००३२५६६६

ई-मेल : bskamd@gmail.com

आओ सब तत्पर हो जायें, सर्वपति बन के दिखलायें।

पोषक तत्वों से भरपूर सेहत का खजाना पौष्टिक खजूर



* त्रिदोषशामक, १३२ प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाला। * शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, फाइबर्स आदि से भरपूर। * तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाला, रक्त-मांस, वीर्य व कांति वर्धक।

* कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद।

(काले खजूर सामान्य खजूर की अपेक्षा ज्यादा मीठे, रसीले, नरम एवं शीतलता प्रदायक होते हैं।)



**बल, स्फूर्ति व बौद्धिक विकास हेतु विशेष औषधि-संग्रह
केसरयुक्त च्यवनप्राश, संजीवनी टेबलेट,**

ब्राह्म रसायन, गुरु रसायन,

अश्वगंधा पाक, सौभाग्य शुंठी पाक

बहुमूल्य जड़ी-बूटियों एवं भस्मों (शुद्ध हीरा भस्म आदि) से बनी ये औषधियाँ पुष्टिदायक, बलवर्धक, मेधावर्धक व उत्तम स्वास्थ्य-प्रदायक हैं। ये अत्यंत क्षीण अवस्था को प्राप्त रोगी को भी नवजीवन प्रदान करने में सक्षम हैं। सर्दियों में इनका सेवन कर सभी निरोगता और दीर्घायुष्य की प्राप्ति कर सकते हैं।



**₹ १६०० डाक खर्च बिल्कुल मुफ्त !
केवल रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा उपलब्ध।**

पंचरस स्वास्थ्य व ऊर्जा प्रदायक, पाचक, रोगनाशक अद्भुत योग

यह आंवला, तुलसी, हल्दी, अदरक एवं पुदीना - इन पाँचों के मिश्रण से बना अत्यंत लाभदायी औषध-योग है। यह भूखवर्धक, पाचक, कृमिनाशक एवं हृदय के लिए हितकर अनुभूत रामबाण योग है। इसके सेवन से पाचनशक्ति सबल होकर शरीर स्वस्थ, मजबूत व ऊर्जावान बनता है, चेहरे की सुंदरता में निखार आता है। रोगप्रतिकारक शक्ति, स्फूर्ति व प्रसन्नता बढ़ती है। यह मोटापा, मधुमेह (diabetes), कैंसर, हृदय की रक्तवाहिनियों का अवरोध, उच्च रक्तचाप (hypertension), कोलेस्ट्रॉल-वृद्धि आदि में अत्यंत लाभदायी है।



उपरोक्त औषधियाँ आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। अन्य उत्पादों व सभी के विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३०, ई-मेल : contact@ashramestore.com

दिवाली पर गरीबों में जीवनोपयोगी सामग्री व नकद दक्षिणा वितरण

RNI No. 48873/91

RNP. No. GAMC 1132/2018-20

(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)

Licence to Post Without Pre-payment.

WPP No. 08/18-20

(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)

Posting at Dehradun G.P.O. between

1st to 17th of every month.

Date of Publication: 1st Dec 2018



चिखला, जि. उदयपुर (राज.)



सागवाड़ा (राज.)



पुणे



बाँगरमर, जि. उन्नाव (उ.प्र.)



कानपुर



सिधौली, जि. सीतापुर (उ.प्र.)



जवहार, जि. पालाघर (महा.)



नीमच (म.प्र.)

गोपाष्टमी पर गौ रक्षा व संवर्धन के संकल्प के साथ हवन, पूजन, गोश्रास



अहमदाबाद



सुरत



गांधीनगर (गुज.)



गौ-जागृति यात्रा
सुरपुर (राज.)



लुधियाना



इंदौर



युवा सेवा संघ, मथुरा ने विधायक
श्री पून प्रकाश को सीमा ज्ञापन

ऋषि प्रसाद के सर्वोपयोगी ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने हेतु कटिबद्ध पुण्यात्मा



विदिशा (म.प्र.)



वसन्तल्लाप्रांज, जि. सीतापुर (म.प्र.)



उदयपुर (राज.)



बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)

‘युवा सेवा संघ’ ने भी किया देशव्यापी ‘ऋषि प्रसाद सदस्यता अभियान’ का संकल्प

अहमदाबाद



रेवाड़ी (हरि.)



राजमार्दानी (छ.ग.)



कोलकाता



बीदर (कर्नाटक)



पटना

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

सत्ताई दर्शनिवाली एक प्रेरणाप्रद डॉक्युमेंट्री
‘प्रहर’ THE BEGINNING

देखें bit.ly/Prahar लिंक पर

- * इसमें आप देख सकते हैं कैसे बनाया जा रहा है भारत को विश्वगुरु पद पर पहुंचानेवाला राजमार्ग।
- * आंखों देखी हकीकत, जिसे देखकर आपके हृदय में आनंद के हिलोरे उठने लगेंगे।

